B.A II Hons IV Paper

~~EAST & WEST ACADEMY~~

जर्मनी में नाजीवाद

हिटलर के नेतृत्व में नाजीवाद का उदय एवं जर्मनी में तृतीय "रीख" की स्थापना वस्तुतः जर्मनी के इतिहास एवं दर्शन की तर्क संगत पल्लवन एवं प्रस्फुटन था। जर्मन लोगों की गर्वीली मानसिकता एवं जुझारू राष्ट्रीय चरित्र के अनुरूप ही नाजीवाद का विकास हुआ था।

वर्साय की कठोर एवं अपमानजनक सन्धि शर्तों के खिलाफ जर्मन लोगों में सामान्य रूप से तीव्र प्रतिक्रिया हुई कोई भी सुसंस्कृत एवं आत्मगौरववादी राष्ट्र संधि की ऐसी शर्तों को सहन नहीं कर सकता, फिर उन जर्मन लोगों का क्या कहना जो अपने राष्ट्रीय गौरव के प्रति अति संवेदनशील थे । वे किसी भी ऐसे राजनीतिक दल अथवा नेता का समर्थन करने को तैयार तत्पर थे, जो वर्साय की संधि शर्तों को धता बताये, उन्हें निरस्त कर डालें। हिटलर की नाजी-पार्टी के कार्यक्रमों की सूची में पहला कार्य था वर्साय की संधि की अवमानना, अतः उसके इर्द-गिर्द समर्थकों की भीड़ बढ़ती ही गयी ।

वीमर गणतंत्र की कमजोरियों एवं उसकी घटती साख ने भी तानाशाही के उदय के लिय मार्ग तैयार कर दिया। गणतंत्रात्मक शासन-व्यवस्था, जर्मन लोगों के लिए महज एक नयी राजनीतिक आजमाइश थी। जर्मनी के लोग अपने राष्ट्रीय सम्मान एवं सत्ता के प्रति इतने निष्ठावान थे कि अपने लिए मताधिकार प्राप्त करने के बजाय वे अपने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देकर अधिक गौरवान्वित महसूस करते थे। ऐसी चारित्रिक विशेषता वाले लोगों को विशुद्ध प्रजातंत्र की गाढ़ी खुराक रास न आयी। जर्मन जनमानस में वीमर गणतंत्र वस्तुतः राष्ट्रीय अपमान का पर्याय बन गया क्योंकि इसी सरकार ने वर्साय की अपमानजनक शर्तों के मसविदे पर स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर किये थे अतः यह सरकार कभी अपनी जनता का प्रियपात्र न बन सकी। यह सरकार जिस नौकरशाही एवं सेना पर आधारित थी, वे राजसत्तावादी तथा राजतंत्रवादी थे । सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में यह सरकार बुरी तरह असफल रही फलतः अभूतपूर्व मुद्रा स्फीति एवं "रहढ़ प्रदेश" के आधिपत्य का संकट उठ खड़ा हुआ।

युद्ध के फलस्वरूप हुई अति-व्यापक बर्बादी एवं संधि शर्तों द्वारा लादी गयी क्षतिपूर्ति एवं हर्जानों के कारण जर्मनी की अर्थ व्यवस्था दिनों दिन पतन की दिशा में बढ़ती -गिरती गयी । बेरोजगारी तथा सामान्य आर्थिक संकट के कारण जर्मनी में रूस जैसी साम्यवादी विचारधारा उत्पन्न होने लगी। जर्मनी में "कम्युनिस्ट पार्टी" की शक्ति में अतिशय वृद्धि हुई। अतिवादी एवं उग्र सुधारवादी विचार-धारा वाले लोग, अपनी क्रमशः बढ़ती हुई आर्थिक असुरक्षा से निजात पाने के लिए रूसी -साम्यवाद की ओर अपेक्षापूर्ण नजर से देखने लगे थे। समाजवादी -साम्यवादी गतिविधियों की बढ़ती लोकप्रियता से त्रस्त भयातुर जमींदार एवं पूँजीपतियों का वर्ग, गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था का और भी मुखर एवं दुराग्रही दुश्मन बन गया। अतः कम्युनिस्टों (साम्यवादी-समाजवादी) की बढ़ती शक्ति एवं लोकप्रियता ने दक्षिण -पंथी दलों को भी अतिवादी-उग्रवादी प्रचार करने को उकसाया, प्रेरित किया।

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद वाले वर्षों में, नैराश्य का एक घना कुहरा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी जरूरतों, कष्टों, बेरोजगारी और

Scanned by TapScanner

(E&W, Vol. 2/4)

अभाव को मात्र देख पा रहा था। सम्पूर्ण जर्मनी में फैलता गया और ना उम्मीदी के इसी वातावरण में हिटलर ने अपनी नाजी पार्टी (या नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी) की स्थापना की। अतः नाजीवाद की शुरुआत एक विरोधी तेवर वाले दल के रूप में हुई और युद्धोपरान्त जर्मनी देश में शायद ही ऐसा कुछ रहा हो जिसके प्रतिविरोध या खिलाफ़त का कोई वैध आधार न हो। नाजीदल पूरी तरह राष्ट्रवादी था। वह जर्मनी से गैर-जर्मन तत्वों का सफाया करना चाहता था। हिटलर ने जर्मनी की जनता के समक्ष शपथ लिया कि वह वर्साय की संधि को कूड़े के ढेर में फेंक देगा यदि उसे सत्ता में आने का अवसर मिले । हिटलर ने भ्रष्ट संसदीय व्यवस्था की घोर निन्दा की तथा साम्यवादी-व्यवस्था की खिल्ली उड़ाई। हिलर की अद्भुत वक्तृता (भाषण कला) तथा प्रचार-मीध्यमों की सहायता से नाजी-सिद्धान्त सम्पूर्ण देश (जर्मनी) में फैल गया। एस. ए. नामक एक अर्द्ध -सैनिक बल का गठन किय गया जो नाजीदल की सभाओ -बैठको की सुरक्षा करने के साथ-साथ जर्मनी के अन्य राजनीतिक दलों की सभाओ-बैठकों में तोड़-फोड़ और विघन डालने का कार्य किया करता था।

राष्ट्रभक्त, विशेषकर युद्ध अनुभवी एवं सेवा-निवृत सैनिक तथा नौजवान, स्वाभाविक रूप से हिटलर की उस घोषणा से आकृष्ट होते जिसमें वर्साय की शर्तों को नष्ट कर डालने का आह्वान किया गया था। अतः एक ऐसे शक्तिशाली व्यक्ति की तलाश शुरू हो गयी जो जर्मन लोगों के आत्म-सम्मान , राष्ट्रीय प्रतिष्ठा एवं खुशहाली के पुनः प्रतिष्ठित कर सके, विशेषकर वर्ष 1930 के पश्चात जब आर्थिक मन्दी से उत्पन्न संकट ने सम्पर्ण जर्मनी को किंकर्तव्यविमूढ़ कर डाला था। इसी समय , भावनाओ को भड़काने वाली अपनी वक्तृता के सहारे हिटलर ने जर्मनी के लोगों के मन में यह बात पक्की तौर पर डाल दी कि वही अकेला ऐसा व्यक्ति है जो उन्हें उनकी सारी मुसीबतों से छुटकारा दिलाकर, अतीत के गौरवशाली दिनों को पुनः लौटा ला सकता है। हिटलर ने जर्मन जनता की मानसिकता को बखूबी समझ लिया तथा असैनिक -नीरस बुर्जुआ गणतंत्रात्मक शासन के स्थान पर एक केन्द्रीयकृत राज्य की स्थापना का लक्ष्य रखा जिसमें नाजी वार्दियों एवं तौर -तरीकों की प्रधानता थी।

वर्ष 1924 से रीखस्टैग में इस दल का प्रतिनिधित्व बरकरार रहा लेकिन नाजी पार्टी की शक्ति में वर्ष 1930 से अप्रत्याशित वृद्धि होने लगी जब जर्मनी आर्थिक मन्दी की चपेट में आकर अस्त-व्यस्त हो रहा था । जुलाई 1932 के चुनाव में, रीखस्टैग की 500 सीटों में से , 230 सीटों पर नाजी पार्टी ने विजय पायी और वह सदन की सबसे बड़ी पार्टी हो गयी । चूंकि कोई भी गणतंत्रवादी मंत्रिमंडल (कैबिनेट) सुगठित नाजी विरोध का मुकाबला करने में समर्थ न हो सकी अतः नवम्बर 1932 में एक दूसरा आम -चुनाव करवाया गया । यद्यपि इस चुनाव में नाजी पार्टी को सदन की केवल 196सीटें प्राप्त हो सकीं । किन्तु फिर भी, कोई स्थिर-स्थायी सरकार बनायी नहीं जा सकी । परिस्थितियों की अनिवार्यता दबाव डाल रही थीं कि हिटलर को कुछ रियायतें दी जाएँ अतः 28 जनवरी 1933 को हिण्डेनवर्ग ने उसे चान्सलर के पद पर नियुक्त किया।

Scanned by TapScanner

नाजी वाद की प्रमुख लाक्षणिक विशेषताएँ

हिटलर द्वारा गठित तृतीय रीख उसके व्यक्तिगत तानाशाही की शुरुआत थी। यह अतिशय केन्द्रीयकृत एकदलीय, सर्वसत्तात्मक राज्य-व्यवस्था थी । जर्मनी का ऐसा एकीकरण हुआ जैसा इसके पूर्व कभी नहीं हो पाया था। जर्मनी के सभी प्रान्तों में एक नाजी गवर्नर नियुक्त किया गया तथा सभी स्थानीय पदाधिकारी एवं कर्मचारी उसके अधीन एवं उसके पति उत्तरदायी बना दिये गये । एक शासकीय घोषणा के द्वारा नाजी दल को राज्य का पर्याय बना दिया गया तथा सभी विरोधी राजनीतिक दलों को अवैध-अमान्स्य घोषित कर उनका उन्मूलन कर दिया गया। जर्मन संस्कृति-साहित्य , अखबार, संगीत , सिनेमा, चित्रकला एव रेडियों आदि की ऐसी "सफाई" की गया ताकि उसमें मौजूद सभी गैर -नाजी या गैर-आर्य तत्व दूर हो जाएँ । सभी प्रकार के सांस्कृतिक क्रिया-कलाप महज राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित प्रचार माध्यम बन गये। सभी प्रकार के गैर -राजनीतिक अभिकरणों को नाजी -राज्य से समझौता-समन्वय करने को बाध्य किया गया और उन सभी चीजों का समूल नाश कर दिया गया जिन्होंने नाजी वाद से प्रतिस्पर्द्धा करने की कोशिश की।

नाजी वाद का एक अन्य महत्वपूर्ण लक्षण उसकी नस्लवादिता थी। हिटलर ने सुस्पष्ट नीति बनाकर यहूदी ‡ज्यू‡ लोगों को राष्ट्रीय जीवन -धारा से बाहर निकालने का जोरदार अभियान छेड़ा । यहूदी व्यापारियों, वकीलों एवं चिकित्सकों का योजनाबद्ध राष्ट्रीय बहिष्कार प्रारम्भ किया गया। नौकरशाही में मौजूद सभी गैर-आर्य ‡या अनार्य‡ पदाधिकारियों -कर्मचारियों को मुअत्तल कर दिया गया । यहां तक कि यहूदी अभिनेता एवं संगीतज्ञ भी रंगमंच से निकाल बाहर किये गये । आइंन्सटीन जैसे पतिभाशाली वैज्ञानिक को भी जान बचाने के लिए जर्मनी से भागना पड़ा क्योंकि वे यहूदी थे। प्रत्येक यहूदी शिशु जन्म लेते ही एक निकृष्ट कोटि का मानव होने-कहलाने को विवश था। कुछ खास जर्मन जिले और सड़कें यहूदियों के लिए वर्जित क्षेत्र घोषित हो गये और इन सभी उपायों का एक मात्र लक्ष्य यह था कि जर्मनी के आर्थिक जीवन से यहूदी नस्ल के लोगों को निकाल बाहर किया जाए।

नाजी आन्दोलन का एक धनात्मक पक्ष भी था जिसे उनकी आर्थिक नीतियों में देखा -पाया जा सकता है। विशालकाय सार्वजनिक कार्यों की शुरुआत की गयी, विवाहित महिलाओ को उनके पदों-कार्यों मुअत्तल कर दिया गया तथा अनेक उद्योगों में काफी बड़ी संख्या में बेरोजगारों को कार्यदिया गया जो उत्पादन के लिए आवश्यक कर्मचारियों -श्रमिको की संख्या से कही अधिक था तथा श्रमिकों के लिए निर्धारित काम के घण्टों मे कमी लायी गयी । वर्ष 1936 के पश्चात जर्मनी का सैनिकीकरण खुलेआम प्रारम्भ कर दिया गया जिससे प्रचुर मात्रा में लोगों ‡जर्मनों ‡ को रोजगार दिलाना शुरु हुआ। वर्ष 1938 तक जर्मनी से बेरोजगारी दूर हो गयी ।

आर्थिक व्यवस्था में नाजी नीतियों का आदर्श निजी सम्पत्ति पर आधारित था जिसमें सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए कड़ राष्ट्रीय नियंत्रण की शक्तियों राजय के हाथों में सुरक्षित रखी गयी थी। श्रमिक-संघ , हड़ताल या तलाबन्दी पूर्णतः निषेधित था किन्तु उद्योगपतियों एवं नियोजकों को भली -भाँति यह समझा दिया गया था कि वे सार्वजनिक कल्याण के सिद्धांतों पर अमल करे क्योंकि सार्वजनिक कल्याण का महत्व वैयक्तिक कल्याण से कहीं अधिक होता है।

Scanned by TapScanner

(E&W, Wor, 4/4)

विदेश व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में नाजी विचारधार जर्मनी को एक स्वशासी -आत्मनिर्भर राज्य बना देने को कृतसंकल्प था अर्थात युद्ध एवं शान्ति, दोनों ही स्थितियों में, जर्मनी की आर्थिक स्वतंत्रता । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जर्मन में होने वाली आयातों को क्रमशः घटाया गया और निर्यात अधिकाधिक बढ़ाया गया। आर्थिक -सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्रिया कलापों का अन्ततः एकमात्र उद्देश्य था - जर्मनी को सैनिक दृष्टि से अधिकाधिक शक्तिशाली बनाना। एक सम्पूर्णतः निर्णायक युद्ध छेड़ने के लिए नाजीवाद को सर्वसत्तावान अर्थतंत्र की आवश्यकता थी जिसमें प्रत्येक घटक तोपों -बन्दूको की सहायता के लिए क्रियाशील रहे।

चूंकि जर्मन नस्ल को सर्वोत्तम आर्य नस्ल माना गया अतः उसकी जनसंख्या बढ़ाने के लिए सभी सम्भावित उपाय किये गये । विशुद्ध जर्मन नस्ल की लड़कियों को विवाह के लिए ऋण देने की व्यवस्था की गयी और प्रत्येक बच्चे के जन्म के साथ ऋण की चौथाई-रकम भरपाई या वसूली हो गयी मानकर चौथाई ऋण से उन्हें मुक्त कर दिया जाने लगा । ऋण देने की व्यवस्था के लिए , अविवाहितों पर विशेष कर लगाकर राजस्व प्राप्त किये गये । वर्ष 1933 से वर्ष 1939 के दौरान जर्मन लोगों की जनसंख्या में तीस लाख से अधिक की वृद्धि हुई।

हिटलर की विदेश नीति की प्रमुख लाक्षणिक विशेषता थी- वर्साय की संधि का अखिल जर्मन स्तर पर उल्लंघन तथा पूर्वी योरोप से सभी दास -नस्लों को बाहर निकाल कर एक विशाल जर्मन साम्राज्य की स्थापना । इस हड़प और विस्तार नीति का अन्तिम परिणाम था द्वितीय विश्व युद्ध।

Scanned by TapScanner